॥ ओ३म् ॥

(वेदोऽखिलो धर्ममूलम्)

ब्रह्मराशि

(संस्कृत वर्णमाला)

लेखक : वीतराग स्वामी तेजानन्द सरस्वती

सम्पादक : डॉ० यतीन्द्र कटारिया 'विद्यालंकार'

प्रकाशक : सर्वश्री चचा जयगोपाल विनोदकुमार

निकट- शरपुर चुंगी, मण्डी धनौरा

जनपद- अमरोहा- 244231 (उ०प्र०)

दूरभाष- 08923285659

॥ ओ३म् ॥

पूज्यपाद पिता 'श्री' लाला जयगोपाल अग्रवाल जी

(पुत्र श्री लाला भगवान दास अग्रवाल जी)

एवं

श्रद्धेय माता जी श्रीमती कश्मीरी देवी जी को

उनकी पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

–विनोद कुमार अग्रवाल, सुबोध कुमार गुप्त

श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल (पुत्रगण) एवं समस्त परिज

।। ओ३म् ।।

(वेदोऽखिलोधर्ममूलम्)

ब्रह्मराशि

(संस्कृत वर्णमाला)

-: लेखक :-

वीतराग स्वामी तेजानन्द सरस्वती

-: सम्पादक :-

डॉ० यतीन्द्र कटारिया 'विद्यालंकार'

-: प्रकाशक :-

सर्वश्री चचा जयगोपाल विनोद कुमार

निकट- शेरपुर चुंगी, मण्डी धनौरा (अमरोहा) उ0प्र0

पिन-244231, चलभाष- 08923285659

लेखक : पूज्य स्वामी तेजानन्द सरस्वती
आर्य समाज मंदिर, बास्टा, जिला- बिजनौर

सम्पादक : डॉ0 यतीन्द्र कटारिया 'विद्यालंकार'
(मंत्री- आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा)

प्रकाशक : सर्वश्री चचा जयगोपाल विनोदकुमार
मण्डी धनौरा- 244231

मुद्रक : आर्यावर्त प्रिंटर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इंटर कॉलेज, अमरोहा (09412139333/ 08273236003)

संस्करण : प्रथम-संस्करण : 2014 (4000 प्रतियाँ)

मूल्य : पाँच रुपये मात्र

: प्राप्ति स्थल :

(1) सर्वश्री चचा जयगोपाल विनोद कुमार
निकट-शेरपुर चुंगी, मण्डी धनौरा, जिला- अमरोहा, (उ0प्र0)- 244231

(2) अर्यसमाज मन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग,
मौ0- सोसायटी, मण्डी धनौरा, जिला- अमरोहा
(उ0प्र0)- 244231

(3) आर्यावर्त केसरी कार्यालय, आर्यावर्त कालोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ0प्र0)- 244221
चलभाष- 09412139333

सम्पादकीय

शब्द, अर्थ एवं सम्बन्ध की व्युत्पत्ति एवं शुचिता की रक्षा के लिए व्याकरण की महत्ता है। व्याकरण का मूलाधार- वर्ण उत्पत्ति, स्थान व उच्चारण है। व्याकरणनिष्ठ तथा आर्ष विद्वान पूज्यपाद स्वामी तेजानन्द जी महाराज ने ब्रह्मराशि अर्थात् संस्कृत वर्णमाला का वैज्ञानिक विवेचन किया है। ईश्वरीय वाणी वेदों के द्वारा ब्रह्मराशि अर्थात् संस्कृत वर्णों का सृजन हुआ है। वर्णज्ञान से ही वेदों का समुचित पठन-पाठन संभव है। अक्षर, उच्चारण, शब्द, वाक्य, पद्य, गद्य ऋषियों को वेदवाणी के रूप में ईश्वरीय प्रदत्त ज्ञान है। पवित्र ब्रह्मराशि का व्याकरण की दृष्टि से स्वामी जी महाराज द्वारा ब्रह्मराशि का लेखन प्रस्तुत है।

संसार की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है। विश्व का समस्त प्राचीन साहित्य संस्कृत भाषा में है, जैसे- चारों वेद, चार उपवेद, वेदांग, छः शास्त्र, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ, रामायण, महाभारत, नाटक, भोज प्रबन्ध, विमान शास्त्र, ज्योतिष, अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, चरक, सुश्रुत, निघण्टु, निरुक्त, छन्दःशास्त्र, काव्यालंकार, अष्टाध्यायी, काशिका, महाभाष्य आदि। इन सभी ग्रन्थों में भारत का प्राचीन ज्ञान-विज्ञान संस्कृत भाषा में निहित है, और मात्र संस्कृत ही नहीं, संसार की कोई भी भाषा उसके व्याकरण के अभाव में पूर्णता प्राप्त कर नहीं सकती। जिज्ञासुओं की ज्ञानवृद्धि हेतु उक्त लघु पुस्तिका में वैज्ञानिक आधार पर संस्कृत के वर्णों के उच्चारण आदि का विवेचन किया गया है।

डॉ० यतीन्द्र कटारिया 'विद्यालंकार'
एम.ए. पीएच.डी.
मौ. महादेव, थाना रोड, मण्डी धनौरा
चलभाष : ०९४१२६३४६७२, ईमेल : yatigk@Gmail.com

प्रकाशक परिवार-परिचय

शहर मण्डी धनौरा के स्वनामधन्य समाजसेवी के रूप में प्रतिष्ठित रहे स्व० चचा जयगोपाल जी का उदात्त परिवार उनके सुपुत्र श्री विनोद कुमार अग्रवाल, श्री सुबोध गुप्ता जी एवं श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल की छत्रछाया में प्रगतिपथ पर अग्रसर है। श्री विनोद कुमार अग्रवाल, शेरपुर चुंगी पर अपनी फर्म सर्वश्री चचा जयगोपाल विनोदकुमार द्वारा व्यापार करते हैं। श्री सुबोध गुप्ता राष्ट्रीय इण्टर कालेज, धनौरा से कार्यालय अधीक्षक पद से सेवानिवृत्त हैं, श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल सिंचाई विभाग (उ०प्र०) में अधिशासी अभियन्ता के पद पर सहारनपुर (उ०प्र०) में कार्यरत हैं। श्री विनोद कुमार अग्रवाल जी की धर्मपरायणा अर्धांगिनी श्रीमती पुष्पा अग्रवाल जी नगर के सामाजिक कार्यक्रमों में अग्रणी रहती हैं तथा १५ वर्षों से अग्रवाल महिला सभा की सक्रिय कार्यकर्ता हैं। श्री विनोद कुमार अग्रवाल के ज्येष्ठ सुपुत्र डॉ० अमित अग्रवाल जी नैल्लूर (आन्ध्रप्रदेश) में नारायणा मैडिकल कालेज में न्यूरो सर्जन हैं, दूसरे सुपुत्र श्री सुमित अग्रवाल जी धनौरा के वाई.एम.एस. डिग्री कालेज में हिन्दी विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर हैं तथा तीसरे सुपुत्र श्री सचिन अग्रवाल जी दिल्ली में तीस हजारी कोर्ट में अधिवक्ता हैं, साथ ही वे पंजाब नेशनल बैंक के लीगल एडवाइजर है। श्री सुबोध कुमार गुप्ता के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री दीपक गर्ग एम.बी.ए. के पश्चात् दिल्ली में शेयर कारोबार कर रहे हैं तथा इनके छोटे सुपुत्र नीरज गुप्ता भारतीय वायुसेना में स्क्वाड्रन लीडर पद पर नियुक्त हैं। श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल जी की ज्येष्ठ सुपुत्री डॉ० नेहा अग्रवाल, दन्त चिकित्सक, मंझला सुपुत्र शुभम् अग्रवाल कम्प्यूटर शिक्षार्थी व छोटी सुपुत्री आकांक्षा अग्रवाल दसवीं की छात्रा है।

प्राक्कथन

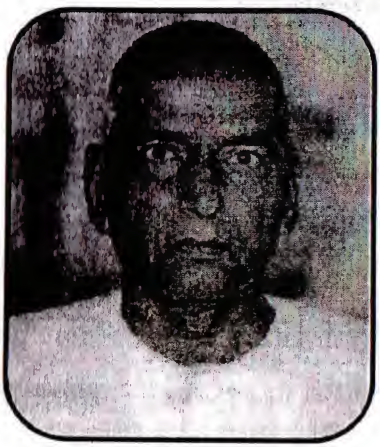

सर्वविदित हो कि पूजनीय आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, निवासी- नारायण भवन (निकट- वानप्रस्थाश्रम) आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार के रहने वाले थे, जिन्होंने अपनी असीम कृपा से प्रसन्न होकर मुझको आर्यसमाज बाष्टा, जनपद- बिजनौर (उ०प्र०) में अपने मुखारविन्द से उपदेश किया था। जिसको मैंने उचित समझकर सर्वसज्जनों के उपकार हेतु श्री गुरुजी की सेवा में अर्पित किया है, जिससे मैं ऋषि-ऋण से निवृत्त हो सकूं। सभी भाई-बहन इससे वेदों का शुद्ध पढ़ना और लिखना जानकर इसका आर्यजगत में प्रचार करें।

दिनांक : ३१ मार्च २०१४
सोमवार, तदनुसार चैत्र शुक्ल
प्रतिपदा, संवत् २०७१ वि०

- तेजानन्द सरस्वती
आर्यसमाज, बास्टा
जनपद- बिजनौर (उ०प्र०)
चलभाष- ०९०१२७१८७४६

ब्रह्मराशि

(संस्कृत वर्णमाला)

महर्षि पाणिनी "शब्दानुशासनम्" द्वारा संस्कृत व्याकरण की गरिमा व वैज्ञानिकता का प्रतिपादन करते हैं। ब्रह्मराशि (संस्कृत वर्णमाला) में संस्कृत भाषा के वर्ण की उत्पत्ति, उच्चारण का विषद विवेचन किया गया है। स्वर, व्यंजन, स्थान व देवता का सहज व सरल परिचय देने में ब्रह्मराशि एक सार्थक पहल है।

-सम्पादक

५ स्वर = अ इ उ ऋ ऌ

१० व्यंजन = क च ट त प
ग ज ड द ब

२ अयोगवाह = ं (अनुस्वार)
ः (विसर्ग)

---

१७ मूल अक्षर

टिप्पणी :- शेष वर्णों का 'विश्वदेव' देवता है।
ऋ ऌ ये दोनों कृत्रिम स्वर कहे जाते हैं।

२२ स्वर

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत	स्थान	देवता
एक मात्रिक हृदय की एक गतिकाल	द्विमात्रिक हृदय की दो गतिकाल	त्रिमात्रिक हृदय की तीन गतिकाल		
अ (संवृतम्) स्वरः	अ+अ=आ (विवृतम्)	अ३ (विवृतम्)	कण्ठ	अग्नि
इ (विवृतम्) स्वरः	इ+इ=ई "	ई३ "	तालु	सोम
उ "	उ+उ=ऊ "	उ३ "	ओष्ठ	अश्वि
ऋ "	ऋ+ऋ=ॠ "	ऋ३ "	मूर्धा	वायु
ऌ "	.....	ऌ३ "	दन्त	रुद्र
५ "	अ+इ=ए	ए३	कण्ठ तालु	विवृततर स्वरः
	अ+उ=ओ	ओ३	कण्ठ ओष्ठ "	
	अ+ए=ऐ	ऐ३	~~ओष्ठ~~ विवृततम् "	
	अ+ओ=औ	औ३	कण्ठ तालु ओष्ठ	
	८	६	~~कण्ठ~~ ओष्ठ	

टिप्पणी :- ये स्वर सानुनासिक अथवा निरनुनासिक दो प्रकार से बोले जाते हैं। यँ वँ लँ ये तीन अक्षर भी उपरोक्त दो ही प्रकार से बोले जाते हैं। रेफ अर्थात् र और ऊष्माः अर्थात् श ष स ह अक्षर सवर्ण नहीं होते हैं।

स्वर :- स्वतन्त्र रूप से तथा मात्रा रूप में भी प्रयोग किये जाते हैं।

२५ स्पर्शा :- ३३ व्यंजन

१- स्पृष्टम् = स्थानों पर जिव्हा का स्पर्श करके बोलना।

वर्ग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	स्थान
कु	क	क+ः =ख	ग	ग+ः =घ	ङ	कण्ठ
चु	च	च+ः =छ	ज	ज+ः =झ	ञ	तालु
टु	ट	ट+ः =ठ	ड	ड+ः =ढ	ण	मूर्धा
तु	त	त+ः =थ	द	द+ः =ध	न	दन्त
पु	प	प+ः =फ	ब	ब+ः =भ	म	ओष्ठ

टिप्पणी :- इन उपरोक्त वर्ग के प्रथम और तृतीय अक्षरों में विसर्ग (:) जोड़ने पर द्वितीय और चतुर्थ अक्षर बन जाते हैं तथा अनुस्वार (ं) को कण्ठादि स्थानों पर क्रमशः ङ, ञ, ण, न, म आदि विकार बन जाते हैं।

२- ईषत् स्पृष्टम्- थोड़ा स्पर्श करना

४- अन्तस्था- इ+अ=य, उ+अ=व, ऋ+अ=र, लृ+अ=ल

३- ईषत् विवृतम् =४ ऊष्मा :-

: विसर्ग को कण्ठ में बोलने पर 'ह' विकार बनता है।

: विसर्ग को मूर्धा में बोलने पर 'ण' विकार बनता है।

: विसर्ग को तालु में बोलने पर 'श' विकार बनता है।

: विसर्ग को दन्त में बोलने पर 'स' विकार बनता है।

टिप्पणी :- ये विसर्ग के स्थान बदलने पर विकार होकर बनते हैं।

६ अयोगवाह

(१) : विसर्ग हृदय में उच्चारण होता है, जैसे- देवदत्तः।

(२) ≍ जिव्हामूल से विसर्ग का उच्चारण करने पर यह विकार होता है, जैसे- देवदत्त ≍ किं करोति?

(३) ≍ उपध्मानीय ओष्ठ से विसर्ग के उच्चारण में यह विकार बनता है, जैसे वृक्ष≍फलति।

(४) ं अनुस्वार नासिका से बोला जाता है, जैसे- यं हं वं

(५) ꣳ ह्रस्व, जैसे- अन्तरिक्ष ꣳ सूर्यात्मा।

(६) दीर्घ, जैसे- ~~हंह (ह ह)~~

(७) अनुनासिक मुख और नासिका से बोला जाता है, जैसे- आँख, चाँद।

(८) ळ ड का विकार, जैसे- अग्निमीळे (अग्निमीडे)

(९) ळ्ह ढ का विकार, जैसे- अजामीळ्ह (अजामीढ)

टिप्पणी :- द्वयोरर्चोमध्ये डकारढकारौ क्रमशः ळ ळ्हकारौ च भवतः इति।

दो अर्चों के बीच (मध्य) में डकार का ढकार हो, तो यथा- क्रम ळ, ळ्ह विकार वेदों में बनते हैं। ये अयोगवाह जिन अक्षरों के साथ प्रयोग होते हैं, उन्हीं के स्थान से बोले जाते हैं।

क्+ष्+अ= क्ष
त्+र्+अ= त्र
ज्+ञ्+अ= ज्ञ

} ये तीनों अक्षर भी संयुक्ताक्षरों में ही आते हैं।

(इति)

लेखक
तेजानन्द सरस्वती
आर्यसमाज, बास्टा, (बिजनौर) उ०प्र०

सम्मति

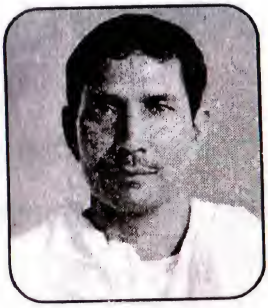

स्वामी तेजानन्द सरस्वती मूर्धन्य वैदिक संन्यासी तथा व्याकरणनिष्ठ हैं। सत्संग, स्वाध्याय स्वामी जी का परिचय है। ब्रह्मराशि अर्थात् संस्कृत वर्णमाला का वैज्ञानिक विवेचन विद्या विलासी जगत को स्वामी जी का उपहार है।

-स्वामी कर्मवीर, योगाचार्य
महर्षि पतंजलि अन्तर्राष्ट्रीय योग विद्यापीठ, हरिद्वार

व्याकरण भाषा का मूलाधार तथा व्याकरण का मूल वर्ण रचना है। पूज्य स्वामी तेजानन्द जी का यह प्रयास स्तुत्य है। इससे संस्कृत प्रेमियों को वर्णज्ञान की दृष्टि से काफी सुविधा होगी। लेखक व प्रकाशक दोनों ही साधुवाद के पात्र हैं।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान- आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा

भाषा विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत भाषा सबसे समृद्ध तथा वैज्ञानिक है। साहित्य, व्याकरण की दृष्टि से संस्कृत का और कोई सानी नहीं है। संस्कृत वर्ण की व्युत्पत्ति, उच्चारण आदि को सरल व सहज ढंग से पूज्य स्वामी तेजानन्द द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इससे संस्कृत जगत को बड़ी सुविधा होगी।

-डॉ. बीना रुस्तगी
एसो. प्रोफे.-हिन्दी, जे.एस.एच.कॉलेज, अमरोहा

- : आर्य समाज के नियम :-

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करना योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार, अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।?

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

॥ ओ३म् ॥

प्रकाशक चित्रावली

श्रीमती पुष्पा अग्रवाल

श्री विनोद कुमार अग्रवाल

डॉ. अमित अग्रवाल
(न्यूरोसर्जन)

डॉ. सुमित अग्रवाल
(एम्स. प्रोफेसर)

सचिन अग्रवाल (अधिवक्ता)

॥ ओ३म् ॥

लेखक परिचय

स्वामी तेजानन्द सरस्वती

जनपद बिजनौर के चाँदपुर तहसील अन्तर्गत ग्राम लुहारपुरा में श्री हरस्वरूप सिंह एवं श्रीमती सुनहरी देवी के घर 5 मार्च, 1940 को जन्मे स्वनामधन्य महाशय तेजपाल सिंह आर्य सच्चे वैदिक मिशनरी तथा वीतराग सन्यासी के रूप में अब स्वामी तेजानन्द सरस्वती के धन्यनाम से घूम-घूम कर वेद प्रचार, यज्ञ व संस्कृति रक्षा को कृत संकल्प हैं। पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोहावर से प्रधानाध्यापक पद से सेवा निवृत्ति के पश्चात् आपने पहले वानप्रस्थ फिर सन्यास आश्रम में प्रवेश किया। स्वामी संकल्पानन्द (सैंदवार) तथा स्वामी चेतनानन्द (महमूदी) से आपने दिव्य वैदिक ज्ञान तथा आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री से व्याकरण की शिक्षा प्राप्त की। तपोनिष्ठ स्वामी तेजानन्द वेदमूर्ति तथा व्याकरणवेत्ता के रूप में कीर्तिमय हैं। पूज्य स्वामी जी को सादर नमन्।

–डॉ. रूबी सिंह कटारिया, एम.ए., पीएच.डी.
प्रधानाध्यापिका– प्राथमिक विद्यालय,
गनौरा, वि.स.– धनौरा (अमरोहा)

पूज्य स्वामी जी का
चलभाष– 09012718746

अवश्य पढ़ें; आज ही सदस्य बनें और घर बैठे पाएं

विश्व भर में वैदिक संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक पत्र

आर्यावर्त केसरी

सदस्यता सहयोग : वार्षिक– 100/– आजीवन– 1100/– संरक्षक– 3100/–

पता :– आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)

डॉ. अशोक कुमार आर्य, संपादक (09412139333, 08273236003)

E-mail : aryawartkesari@gmail.com

अपनी सहयोग राशि स्टेट बैंक स्थित आर्यावर्त केसरी के बचत खाता संख्या– 30404724002 में जमा करा सकते हैं, अथवा सीधे चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं।